6 दिसम्बर बाबा साहेब के निर्वाण दिवस पर भावभीनी श्रद्धांजलि

प्रकाशक/स्वामीत्व
रजनी (पुत्री-महेश धावनिया)

डाक पंजियन संख्या : JaipurCity/423/2017-19

श्री बाबा

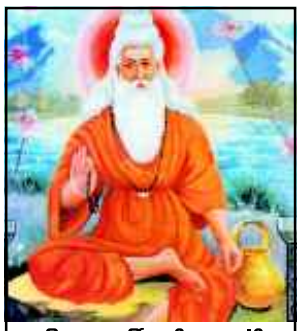
31 दिसम्बर महर्षि बालीनाथ जयंती पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

प्रधान कार्यालय-सी-57, महेश नगर, जयपुर-15, मो.-9928260244 हिन्दी मासिक समाचार पत्र 7073909291 E-mail:shreebaba_2008@yahoo.com

वर्ष : 12 अंक : 10 आर.एन.आई. नं. : RAJHIN/2008/24962 जयपुर, 5 दिसम्बर, 2019 मूल्य : 5 रुपए प्रति पृष्ठ : 4

जरूरतमंद को सामाजिक सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध हमारी सरकार: अशोक गहलोत

जयपुर। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा कि सामाजिक सुरक्षा जरूरतमंद व्यक्ति का अधिकार है। राज्य सरकार प्रत्येक पात्र व्यक्ति को सामाजिक सुरक्षा देने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि यूपीए सरकार ने देश में शिक्षा का अधिकार, रोजगार का अधिकार, खाद्य सुरक्षा का अधिकार देकर इस दिशा में कदम बढ़ाया था। हमारा प्रयास है कि प्रदेश में लोगों को स्वास्थ्य का अधिकार भी मिले। श्री गहलोत

गोविंददेव जी मंदिर में ट्रस्ट की ओर से सरकारी संस्कृत विद्यालयों के विद्यार्थियों को निशुल्क गर्म वस्त्र वितरित कर कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से पूरे समाज को मानव सेवा की प्रेरणा मिलती है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि मंदिर ट्रस्ट सहित अन्य सेवाभावी संस्थाएं सामाजिक सरोकारों से जुड़े ऐसे कार्यक्रम बड़े स्तर पर आयोजित करें। मुख्यमंत्री ने कहा कि संस्कृत देववाणी है और राजस्थान में संस्कृत के उच्च कोटि के विद्वान हुए हैं। राज्य सरकार ने प्रदेश में संस्कृत को बढ़ावा देने के लिए सदैव प्रयास किए हैं। मुख्यमंत्री के रूप में मेरे पहले कार्यकाल में हमारी सरकार ने जयपुर में संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। वर्तमान में प्रदेश में करीब 2 लाख विद्यार्थी संस्कृत विषय का अध्ययन कर रहे हैं। श्री गहलोत ने कहा कि पीड़ित मानवता की सेवा करना पुण्य का कार्य है। उन्होंने शनिवार की अपनी अहमदाबाद यात्रा का जिक्र करते हुए कहा कि वहां के सत्य साईं अस्पताल के साथ राज्य सरकार ने एमओयू किया है। (शेष पृष्ठ 2 पर)

बैरवा समाज के संत शिरोमणी ''महर्षि बालीनाथ जी महाराज मार्ग'' का लोकार्पण

जयपुर। अखिल भारतीय बैरवा महासभा (पंजि. एस. 277 जेएससी) राजस्थान प्रदेश के आयोजित समारोह में

सांगानेर थाने से 7 नम्बर बस स्टेण्ड जगतपुरा, जयपुर तक के मार्ग (संड़क) का नामकरण बैरवा समाज के संत शिरोमणी ''महर्षि बालीनाथ जी महाराज मार्ग'' का लोकार्पण समारोह सम्पन्न हुआ। प्रदेश महामंत्री एडवोकेट मोहनप्रकाश बैरवा ने बताया कि समारोह में सर्वप्रथम डॉ. बी.आर. अम्बेडकर एवं महर्षि बालीनाथ जी महाराज के फोटों पर अथितियो ने पुष्प माला अर्पित की।

सभी अतिथियों को पदाधिकारियो द्वारा माला, साफा, शाल व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

समारोह में मुख्य अतिथि श्री विष्णु लाटा जी, महापौर जयपुर नगर निगम, अध्यक्षता श्रीमती गंगा देवी जी, विधायक बगरू, अखिल भारतीय बैरवा महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय हरिनारायण बैरवा जी (पूर्व अति.परिवहन आयुक्त), नगर निगम चैयरमैन श्री रामनिवास जोनवाल जी, श्री रमेश कुमार बैरवा जी ने ''महर्षि बालीनाथ जी महाराज मार्ग'' का लोकार्पण किया।

मुख्य अतिथि विष्णु लाटा जी, महापौर ने समारोह को सम्बोधित करते हुये अखिल भारतीय बैरवा महासभा पदाधिकारियो/सदस्यगणों, नागरिक बन्धुओ को बधाई एवं शुभकानाएं दी व समाज को इसी तरह के रचनात्मक कार्यो में अपना योगदान देने के लिए कहा।

श्रीमती गगां देवी क्षेत्रीय विधायक बगरू ने अपने उद्बोधन में समाज को एकजुट रहने की व शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कहा तथा सभी को इस पुनित अवसर पर बधाई दी। (शेष पृष्ठ 4 पर)

समाजसेवी आर्किटेक्ट माल्या को श्रीलंका में मानद डॉक्टरेट उपाधि

जयपुर। श्रीलंका की मेडिसिना अल्टरनेटिवा दी ओपन इन्टरनेशनल युनिवर्सिटी फ़ॉर कॉम्पलिमेन्टरी मेडिसिन्स की ओर से कोलम्बो मे आयोजित 57 वें अन्तराष्ट्रीय अधिवेशन व दीक्षान्त समारोह मे जयपुर के समाजसेवी आर्किटेक्ट दौलत राम माल्या को उत्कृष्ट सामाजिक कार्यों के लिए मानद डॉक्टरेट की उपाधि दी गई। माल्या को यह उपाधि अनेक देशों मे विख्यात संस्थानों के प्रमुखों ने कोलम्बो के भन्डारनायके मेमोरियल इन्टरनेशनल कन्वेनशन हॉल मे दी गई ।इस अवसर पर विश्वविद्यालय द्वारा अनेक देशों की मुख्य हस्तियों को उनके कार्यक्षेत्रों के अनुसार अलग अलग उपाधियाँ दी गई।

उल्लेखनीय है कि आर्किटेक्ट माल्या को इससे पूर्व भी देश विदेश की अनेक संस्थाये सम्मानित कर चुकी है इनके अन्य सामाजिक सेवा के लिए मानद उपाधि मिलने पर राज्य सभा सांसद रामकुमार वर्मा, सीनियर आईएएस पी.सी. बैरवाल सेवा नि.वृत्ति आईएएस, बी.एल. नवल एवं सफी मोहम्मद कुरेशी, राजीव पांडे एडीम जयपुर,सीए विजय गोयल,उदय कौशल फाउंडेशन के संस्थापक एवं अध्यक्ष पूर्व जिला जज एवं सेशन न्यायाधीश उदय चंद बारूपाल, डॉक्टर अंबेडकर मेमोरियल वेलफेयर सोसाइटी राजस्थान के पूर्व महासचिव एवं अखिल बैरवा महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष हरिनारायण बैरवा एवं जयपुर बैरवा छात्रावासों अध्यक्ष दीप चंद बैरवा, समाजसेवी सुरेस कुमार बैरवा कांस्या ,पूरणमल बुनकर शाहपूरा, शिवराज जाजुन्दा दूदू, हंसराज चौधरी फागी , राजूलाल बेनीवाल चाकसू सहित विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारियों ने फोन पर दी माल्या को हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई।

सर्व धर्म सामूहिक विवाह सम्मेलन सम्पन्न

जयपुर। शीतला माता चाकसू के प्रांगण में गत दिनों यू जाग्रति सामाजिक सेवा संस्थान के तत्वाधान में नवां सर्वधर्म सामेहिक विवाह सम्मेलन आयोजित किया गया। जिसमें 138 जोड़ों का सामूहिक

विवाह सम्मन्न हुआ। जिसमें 132 हिन्दू जोड़ों के फेरे हुए तथा 6 मुस्लिम जोड़ों का निकाह किया गया। विवाह सम्मेलन में सांगानेर विधायक अशोक लाहोटी, राष्ट्रीय बैरवा महासभा अध्यक्ष हरिनारायण बैरवा, कजोड़मल बैरवा प्रदेशाध्यक्ष, प्रभुलाल बैरवा प्रदेशाध्यक्ष अखिल भारतीय प्रगतिशील बेरवा महासभा व संचालक बैरवा युग समाचार पत्र, महेश धावनियां प्रदेशाध्यक्ष प्रान्तीय बैरवा प्रगति संस्था, राष्ट्रीय मंत्री श्याम लाल बैरवा केकड़ी, भाजपा महिला मोर्चा महामंत्री मनोज सिंह डागुर, भूपेन्द्र सैनी, नवरत्न नारानिया, जिलाध्यक्ष के.के. टाटीवाल, बजरंगलाल बेरवा, पिंकी बुहाडिया, एडवोकेट भैरं लाल बैरवा जिला अध्यक्ष भीलवाड़ा ने नवदंपतियों को आशीर्वाद प्रदान कर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। इस सम्मेलन में बैरवा, मीणा, खटीक, रैगर, महावर, सैन, महाजन सहित कई हिन्दू धर्म (शेष पृष्ठ 4 पर)

डॉ. अम्बेडकर मेमोरियल वेलफेयर सोसायटी जयपुर एवं राजीव गाँधी के संयुक्त तत्वावधान में संविधान दिवस मनाया

जयपुर। डॉ. अम्बेडकर मेमोरियल वेलफेयर सोसायटी जयपुर एवं राजीव गाँधी स्टडी सर्कल, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में संविधान दिवस के उपलक्ष्य में आधुनिक भारत की यात्रा में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का योगदान के विषय पर विचार गोष्टी 26 नवम्बर, 2019 को संस्था प्रांगण में आयोजित की गयी।

संस्था के महासचिव अनिल गोठवाल ने बताया कि मुख्य अतिथि प्रो. आर.एस. बारेठ, पूर्व कुलपति एम.डी.एस., विश्वविद्यालय ने (शेष पृष्ठ 2 पर)

आमजन की आवाज बनेगी अगले हफ्ते होने वाली संविधान कथा: असवाल

जयपुर। संविधान की 70वीं सालगिरह और बाबा साहेब डॉ. बी.आर. अम्बेडकर जी की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में 8 दिसम्बर को डॉ. बी.आर. अम्बेडकर जयन्ती समारोह समिति की ओर से संविधान कथा आयोजित की जाएगी। इसे लेकर हुई समिति की कार्यकारिणी की बैठक में निर्णय लिया गया कि संविधान कथा को जन-जन की आवाज बनाया जाए, इसके लिए महिला जनप्रतिनिधियों और कार्यकारिणीयों ने समिति अध्यक्ष व पूर्व आईएएस एल.सी. असवाल से चर्चा की।

असवाल ने कहा कि समभाव, समसमाज, समअधिकार का मूल आधार ही संविधान है। समाज की सुरक्षा, सम्मान, इज्जत, रोजी-रोटी और आजीविका प्रदान करने की कोई कानूनन किताब है तो वह है संविधान, देश की शासकीय प्रशासकीय व्यवस्था का संचालन ही संविधान है।

समाचार विज्ञापन संकलन

श्री बाबा समाचार पत्र की प्रकाशन तिथि प्रत्येक माह की 5 तारीख है। अतः समाचार एवं विज्ञापन आदि के प्रकाशन के लिए विज्ञप्ति, फोटो आदि सामग्री माह की 20 तारीख तक पूर्ण विवरण के साथ भिजवा दें। सम्पर्क करें:

श्री बाबा whatsapp 7073909291

सी-57, महेश नगर, 80 फीट रोड, जयपुर-15

मो.-9928260244 E-mail : shreebaba_2008@yahoo.com

सम्पादकीय

कॉल डेटा महंगा

टेलिकॉम कंपनियों द्वारा मोबाइल कॉल और नेट शुल्क बढ़ाए जाने के निर्णय का राजनीतिक विरोध भले हो लेकिन इससे अंतर नहीं आने वाला। निस्संदेह, वोडाफोन-आइडिया तथा एयरटेल के उपभोक्ताओं पर अतिरिक्त बोझ पड़ेगा। दोनों कंपनियों ने प्रीपेड मोबाइल सेवाओं की दरें 50 प्रतिशत तक बढ़ाने की घोषणा की हैं। ध्यान दें कि यह करीब चार साल में पहली वृद्धि है। कहा जाता रहा है कि भारत में कॉल एवं डेटा दुनिया में सबसे सस्ता है। पता नहीं पूरी दुनिया में कार्यरत सभी कंपनियों के शुल्कों का किसी ने अध्ययन किया है, या नहीं। इसलिए इसकी पुष्टि कठिन है। सच यह है कि भारत में मोबाइल कंपनियों ने लंबे समय तक उपभोक्ताओं को काफी महंगी सेवाएं दीं। इनकमिंग तक के शुल्क थे और रोमिंग शुल्क अलग से। समय के साथ बढ़ती प्रतिस्पर्धा में ये सस्ते होते गए और इतने हो गए कि समाज के सबसे निचले स्तर का व्यक्ति भी मोबाइल उपयोग करने लगा। जिओ के धमाकेदार अवतरण ने सारी कंपनियां हिला दीं। शुरू में तो उसने मुफ्त सीम कार्ड बांटे तथा दर इतनी कम रखी कि विास करना कठिन था। आज जिओ छा गया है। दूसरी कंपनियों के लिए टिकना कठिन हो गया है। दूसरी कंपनियों के नेटवर्क की समस्या इतनी भयावह हो गई कि चाहे-अनचाहे लोगों को जिओ की सेवा लेनी पड़ी। इस तरह भारत की मोबाइल सेवा में जिओ की बादशाहत स्थापित हो चुकी है। एक समय भारत में मोबाइल की तेरह कंपनियां थीं। धीरे-धीरे ज्यादातर बंद हो गई। अब जिओ के अलावा एअरटेल तथा आइडिया-वोडाफोन का संयुक्त उद्यम बचा है। सरकार पर आरोप लगता रहा है कि उसने जिओ के लाभ की दृष्टि से नियम बनाए। इस आरोप पर कुछ कहना कठिन है। आज हालत यह है कि जितना घाटा आइडिया वोडाफोन को हुआ है उसमें उनके सामने भी बोरिया बिस्तर बांध कर चले जाने की नौबत है। सरकारी कंपनियां बीएसएनएल व एमटीएनएल पहले से ही जर्जर हैं। अगर बची दो कंपनियों में एक खत्म हो जाए तो कोई प्रतिस्पर्धा ही नहीं रहेगी। आगे एअरटेल भी इस खतराक स्थिति का शिकार हो सकती है। वैसे जिओ ने भी अपने शुल्क में थोड़ी बढ़ोतरी की है। हालांकि शेष दो कंपनियों ने सभी श्रेणियों का शुल्क नहीं बढ़ाया है। वोडाफोन-आइडिया ने प्रीपेड प्लान तथा एयरटेल ने सीमित डेटा एवं कॉलिंग वाले प्लान की शुल्कों में भी संशोधन किया है। किंतु आगे सभी श्रेणी के उपभोक्ताओं को ज्यादा शुल्क वहन करने के लिए तैयार रहना होगा।

सदस्यता शुल्क

वार्षिक सदस्यता

100 रुपए

विशिष्ट द्विवार्षिक सदस्यता

500 रुपए

साथ में पाएं दो वैवाहिक एवं एक क्लासीफाइड डिस्प्ले विज्ञापन बिल्कुल मुफ्त

आजीवन सदस्यता

2100 रुपए

संरक्षक सदस्यता

5100 रुपए

बाबा साहब के कारवां से तात्पर्य

आज बाबा साहब के कारवां को आगे ले जाने का काम तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग विभिन्न संस्थानों के माध्यम से कर रहा है। इनकी कार्यशैली मंचीय है। मंचीय प्रोग्राम आवश्यक रूप से एक मार्गीय होते हैं। वक्ता भाषण देता है उस भाषण की प्रमाणिकता कभी सिद्ध नहीं होती। ताली बजती है, धन्यवाद ज्ञापित होता है और प्रोग्राम समाप्त।

गतांग से आगे

जो गुलाम संघर्ष करना ही नहीं जानता था अन्याय को सहन करते रहता था तथा उसमें मनोबल नाम की चीज ही नहीं थी उस गुलाम को बाबा साहब ने अपने महान एवं कालाराम मंदिर प्रवेश आंदोलन के माध्यम से संघर्ष का रास्ता अपनाने के विरोध की भावना में लड़ना सिखाया ऐसी बात नहीं थी कि अछूत, चावदार (तालाब का पानी पीकर जिंदा थे। वे पानी तो पहले भी पी रहे थे, परन्तु चावदार तालाब के पानी के लिए आंदोलन अपने कानूनी हक व अधिकार के लिए था, समानता के व्यवहार के लिए था। ठीक उसी प्रकार से कालाराम मंदिर प्रवेश अपनी धार्मिक स्वतंत्रता को पुष्ट करने के लिए था।) गालमेज सम्मेलन से गांधी एवं कांग्रेस के कुचक्रो से बचकर निकलना ही नहीं, अछूतों के लिए पृथक निर्वाचन मण्डल तथा द्वितीय चुनाव प्रणाली हासिल करना उनकी सबसे बड़ी राजनीतिक जीत थी। इसी गोलमेज सम्मेलन से बाबा साहब ने अछूतों के लिए एक अलग पहचान बनाई अन्यथा वो तो हिन्दुओं के साथ नरमी कर रहे थे। हालांकि गांधी के विरोध के चलते द्विमतीय पृथक निर्वाचन मण्डल अमल में नहीं आया, परन्तु इस अधिकार की घोषणा ने अछूतों में गजब के मनोबल का संचार किया, सवर्णों की दुर्भावंत

खुलकर सामने आई तथा अछूतों को एक अलग वर्ग के रूप में पहचान मिली। बाबा साहब ने जीवन पर्यन्त सामाजिक सुधारों के लिए लड़ाई लड़ी। उनके आंदोलन ने भारतीय जनमानस को रूपांतरित किया। छुआछूत पर प्रतिबंध, शिक्षा का अधिकार, व्यस्क मताधिकार, सामाजिक एवं धार्मिक कुरीतियों के खिलाफ संघर्ष, हिन्दू कोड बिल के आधार से धार्मिक सुधार एवं महिला सशक्तिकरण इत्यादि ऐसे कुछ उदाहरण है जो बाबा साहब को मानवाधिकारक के महानायक तथा महान समाज सुधारक स्थापित करते हैं। आज हमारे सामने महत्वपूर्ण सवाल है कि हम बाबा साहब के कारवां को आगे कैसे ले जाएं? किसी भी कार्य में सफलता उस कार्य के उद्देश्य है। उद्देश्य की प्राप्ति के लिए योजना तथा योजना पर कार्य का प्रतिफलन है। कारवां का उद्देश्य है नवजागरण तथा हमारे पास अंबेडकरवाद के रूप में बहुत ही बढ़िया योजना ही, परंतु योजना पर कार्य नहीं हो रहा है और जो कुछ कार्य भी हो रहा है वह आंतरिक कलह, प्रतिद्वंद्विता तथा बाहरी घुसपैठ ने बर्बाद कर दिया है अत: कारवां दुर्घटनाग्रस्त पड़ा है। **क्रमश:**

वैवाहिक

वर चाहिए

* जयपुर निवासी, 28 वर्ष, शिक्षा-एम.ए., बी.एड, पिता-निजी कार्य, गौत्र-गोठवाल, घुणावत, कुण्डारा, सामने माली न हो, मो. 7232830378
* जयपुर निवासी, 26 वर्ष, शिक्षा-बी.कॉम, पिता-निजी कार्य, गौत्र-गोठवाल, बंशीवाल, मीमरोट, सामने सुलानिया न हो, मो. 9351759022
* जयपुर निवासी, 30 वर्ष, शिक्षा-एम.ए., बी.एड, एम.एस.सी., पिता-निजी कार्य, गौत्र-बंशीवाल, गोठवाल, सुलानिया।
* जयपुर निवासी, 25 वर्ष, शिक्षा-एम.ए., पी.जी.डी.सी., पिता-निजी कार्य, गौत्र-गोठवाल, घुणावत, कुण्डारा, सामने माली न हो।
* जयपुर निवासी, 25 वर्ष, शिक्षा-एम.ए., पिता-निजी कार्य, गौत्र-बड़गोती (लालावत), बंशीवाल, सांवलिया।
* जयपुर निवासी, 28 वर्ष, शिक्षा-बी.कॉम, पिता-निजी कार्य, गौत्र-बेथेड़ा, नागरवाल, लोदवाल, सामने भियाणा न हो, मो. 8560026938
* जयपुर निवासी, 28 वर्ष, शिक्षा-बी.ए., आईटीआई, पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-नगवाडा, कुण्डारा, जोनवाल, सामने मेहर न हो, मो. 8302594945
* जयपुर निवासी, 28 वर्ष, शिक्षा-बी.कॉम, पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-नगवाडा, कुण्डारा, जोनवाल, सामने मेहर न हो, मो. 8302594945
* टोंक निवासी, 29 वर्ष, शिक्षा-एम.ए., वर्तमान में प्राईवेट नौकरी दिल्ली में, पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-नागरवाल, लोदवाल, मरमट।
* दौसा निवासी, 29 वर्ष, शिक्षा-बी.ए., एम.बी.ए., फैशन डिजाईनर, पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-मीमरोट, माली, गोठवाल।
* जयपुर निवासी, 30 वर्ष (विधवा), शिक्षा-एम.ए., पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-नागरवाल, गुमलाडू, मेहरा।
* जयपुर निवासी, 28 वर्ष (विधवा), शिक्षा-एम.ए., वर्तमान में जी.एन.एम., गौत्र-कुण्डारा, कारौल्या, मरमट, सामने नागरवाल न हो, मो. 9887078013
* जयपुर निवासी, 29 वर्ष, शिक्षा-एम.ए., पिता-निजी कार्य, गौत्र-सुलानिया, मरमठ, गोठवाल और सामने महर ना हो, मो. 9928260244

वधू चाहिए

* फुलेरा-जयपुर, 50 वर्ष, (विधुर) शिक्षा-एम.ए, वर्तमान में एल.आई.सी. एजेंट, मासिक आय-16,000 रुपये, गौत्र-गोठवाल, देवतवाल, बेथेड़ा।
* टोंक निवासी, 34 वर्ष, शिक्षा-एम.एस.डब्ल्यू, वर्तमान में संविधाकर्मी लेबर डिपार्टमेंट, मासिक आय- 25000 रुपये, पिता निजी कार्य, गौत्र-लोदवाल, बड़ोदिया, रेणिवाल, परालिया।
* जयपुर निवासी, 31 वर्ष, शिक्षा-एम.ए., बी.एड., टेट, रीट, पिता राजकीय सेवा, गौत्र-लोदवाल, जाटवा, गंगवाल।
* टोंक निवासी, 32 वर्ष, शिक्षा-12वीं पास, वर्तमान में राजकीय सेवा (फॉर्थ क्लास), गौत्र-चरांवडिया, गजरानिया, मेहरा, नागरवाल।
* टोंक निवासी, 35 वर्ष (तलाकशुदा), शिक्षा-बी.ए., वर्तमान में प्राईवेट जॉब, मासिक आय- 12 हजार रुपये, पिता निजी कार्य, गौत्र-जाटवा, उज्ज्वल, गोठवाल।
* फरीदाबाद निवासी, 30 वर्ष, शिक्षा-बी.टेक. इलेक्ट्रीकल, वर्तमान में बिल्डर का कार्य, पिता निजी कार्य, गौत्र-मरमठ, जाटवा, मुराडी।
* जयपुर निवासी, 36 वर्ष, (तलाक सुदा) शिक्षा-बी.एड., वर्तमान में टेलरिंग का कार्य, पिता निजी कार्य, गौत्र- गोठवाल, नागरवाल, मीमरोट, कुण्डारा।
* टोंक निवाई निवासी, 26 वर्ष, शिक्षा-एम.बी. आई.टी., वर्तमान में प्राईवेट कार्य, गौत्र-कुवाल मरमट, बीलवाल।
* लाखेरी निवासी, 27 वर्ष, शिक्षा-बी.टेक इलेक्ट्रोनिक इंजीनियर, वर्तमान में आई.टी. कम्पनी में कार्यरत, पिता राजकीय सेवा, गौत्र-जाटवा, सीवतिया, टटवारिया, मो. 8580692811
* जयपुर निवासी, 34 वर्ष, (तलाक सुदा) शिक्षा-बी.ए., एम.ए., वर्तमान में सिस्टम इंजिनियर, गौत्र-भीमवाल, रेशवाल, मीमरोट, मो. 9950917562
* जयपुर निवासी, 31 वर्ष, शिक्षा-बी.ए., एम.ए., एम.बी.ए., एस.एस.सी. पास, पिता राजकीय सेवा, गौत्र-बंशीवाल, नागरवाल, सुलाणिया, सामने बैथेड़ा ना हो।

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें, **मो.: 9928260244**

जरूरतमंद को सामाजिक सुरक्षा... (पृष्ठ 1 का शेष)

इस अस्पताल में प्रदेश के हृदय में छेद एवं वाल्व की बीमारी से ग्रसित बच्चों को निशुल्क उपचार, आवास एवं भोजन की सुविधा प्राप्त हो रही है। हमारा प्रयास है कि प्रदेश के किसी बच्चे को इलाज के अभाव में अपनी जान नहीं गंवानी पड़े।

मुख्यमंत्री ने समाज सेवा के इस पुनीत कार्य के आयोजन के लिए गोविंददेव जी मंदिर ट्रस्ट एवं महंत श्री अंजन गोस्वामी को धन्यवाद दिया। उन्होंने इस अवसर पर मंदिर ट्रस्ट की नई वेबसाइट का लोकार्पण एवं पोस्टर का विमोचन भी किया।

मुख्य सचेतक डॉ. महेश जोशी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि समाज के विभिन्न वर्गों के उत्थान के लिए मुख्यमंत्री कर्मयोगी के रूप में लगातार फैसले ले रहे हैं। मानवता की सेवा की दिशा में वे सदैव प्रयासरत रहते हैं। उन्होंने कहा कि गोविंद देवजी मंदिर का अपना आध्यात्मिक महत्व है। जयपुर के लोगों का इस मंदिर से विशेष जुड़ाव है।

इससे पहले मुख्यमंत्री ने गोविंद देवजी मंदिर में पूजा-अर्चना कर प्रदेश की खुशहाली की कामना की। इस अवसर पर विधायक श्री अमीन कागजी, पूर्व महापौर श्रीमती ज्योति खण्डेलवाल सहित अन्य जनप्रतिनिधि, संत-महंत, स्कूली विद्यार्थी एवं आमजन उपस्थित थे।

डॉ. अम्बेडकर मेमोरियल वेलफेयर... (पृष्ठ 1 का शेष)

गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए कहा कि भारत का संविधान दुनिया भर में सर्वश्रेष्ठ संविधान है इसकी रक्षा करना तथा संविधान की मूल भावनाओं का ध्यान रखना व संविधान के अनुसार चलना हमारा दायित्व है। बाबा साहब डॉ. बी.आर. अम्बेडकर ने संविधान में शिक्षा का, महिलाओं का कल्याण, पिछड़ों का, गरीब वंचितों का, श्रमिकों का, किसानो के हित के लिए जो प्रावधान किये हैं उन पर अमल करते हुए देश का चहुमुखी विकास करना है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ. गणेश परिहार, अतिरिक्त महाधिवक्ता ने भी संविधान के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला। इससे पूर्व प्रो. एम.आर. सैनी, प्रो. सतीश राय, श्री बी.एल. सैनी ने भी अपने विचार रखे।

संस्था के अध्यक्ष डॉ. भजन लाल रोलन ने कार्यक्रम में पधारें सभी अतिथि एवं गणमान्य नागरिकों व छात्र-छात्राओं का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा की संविधान दिवस को पखवाड़े के रूप में पुरे देश में मनाया जाये तथा संविधान की जानकारी जन-जन तक पहुंचाई जाये। गोष्ठी से पूर्व संगोष्ठी में उपस्थित सम्भागियों से संविधान के सम्बन्ध में खूली चर्चा की गयी तथा संविधान सम्बन्धित प्रश्न पूछे गये छात्रों ने पूछे गये सवालों का उत्साहपूर्वक सही जवाब दिया। संस्था के अध्यक्ष डॉ. भजन लाल रोलन, महासचिव अनिल कुमार गोठवाल, डॉ. ध्यानसिंह गोठवाल, सीनेट सदस्य राजस्थान विश्विद्यालय, उपाध्यक्ष लक्ष्मीनारायण वर्मा, केप्टन मुकेश वाल्मीकि, संयुक्त सचिव बी.डी. बैरवा, सी.पी. बैरवा, पी.एन. बुटोलिया, लक्ष्मी नारायण बैरवा, बी.एल.गोरा ने अतिथियों का स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया। गोष्ठी में सुझाव दिया की इस प्रकार की गोष्ठी गाँव-गाँव, ढाणी-ढाणी की जावे तथा संविधान के जानकार न्यायधीश को बुलाकर संविधान की जानकारी दिलाई जावे। डॉ. ध्यानसिंह गोठवाल, सीनेट सदस्य राजस्थान विश्वविद्यालय ने स्वागत भाषण दिया तथा संगोष्ठी के महत्व पर प्रकाश डाला।

संगोष्ठी में पूर्व मानवधिकार आयोग के सदस्य जी.एस. सोमावत जी, पूर्व अध्यक्ष पी.सी. हार्डिया जी, पूर्व आईएएस एम. एस. काला, पूर्व महासचिव हरिनारायण बैरवा, बी.एल. भाटी उपाध्यक्ष, एस.के. बैरवा पूर्व वरिष्ठ उपाध्यक्ष, महेंद्र सिंह अतिरिक्त मुख्य अभियंता, श्रीमती गोमा सागर, लाला राम सहित सैकड़ों लोगों ने संगोष्ठी में भाग लिया। संगोष्ठी का संचालन महासचिव अनिल गोठवाल एवं बी.डी. बैरवा संयुक्त सचिव ने किया।

भारत में किस हाल में जी रहा है दलित समाज ?

गतांक से आगे

आज़ादी के बाद बने भारत के संविधान में दलित हितों के संरक्षण के लिए ये व्यवस्थाएं की गई हैं. हालांकि उन्हें लागू करने की प्रक्रिया आधी-अधूरी ही रही है. फिर भी इनकी वजह से दलितों के एक तबके को फ़ायदा हुआ है. अस्तित्व के लिए उनकी लड़ाई आसान हुई है.

इन कदमों की वजह से आज दलितों की हर जगह नुमाइंदगी होती है. राजनीति (संसद और विधानसभाओं-स्थानीय निकायों) में ये संख्या सुनिश्चित है.

हम दलित हैं इसलिए हमारी चाय नहीं पिएंगे आप

लेकिन शैक्षिक संस्थानों और सरकारी नौकरियों (अफसरशाही) में भी हम दलितों की नुमाइंदगी देखते हैं.

एक सदी पुरानी हालत में दलित

हालांकि, अकादेमिक और ब्यूरोक्रेसी के विकास में उनकी तादाद घट रही है. पिछले सात दशकों में दलितों की दूसरी और तीसरी पीढी, तरक्की की नई ऊंचाइयां छू रही है.

ज़्यादातर मामलों में अब उन्हें आरक्षण की ज़रूरत नहीं मालूम होती. आज अमरीका और दूसरे देशों में दलित अप्रवासियों की अच्छी-ख़ासी आबादी रहती है.

आज कई दलितों ने कारोबार में भी सिक्का जमाया है और यहां तक कि उनके अपने दलित इंडियन चैम्बर ऑफ कॉमर्स ऐंड इंडस्ट्री भी है.

तो, ऐसा लगता है कि दलितों के एक तबके ने काफी तरक्की कर ली है, लेकिन अभी भी ज़्यादातर दलित उसी हालत में हैं, जिस स्थिति में वो आज से एक सदी पहले थे. जिस तरह से आरक्षण की नीति बनाई गई है, ये उन्हीं लोगों को फ़ायदा पहुंचाती आ रही है, जो इसका लाभ लेकर आगे बढ़ चुके हैं. नतीजा ये है कि दलितों में भी एक छोटा तबका ऐसा तैयार हो गया है, जो अमीर है. जिसे व्यवस्था का लगातार फ़ायदा हो रहा है. ये दलितों की कुल आबादी का महज़ 10 फ़ीसद है. आम्बेडकर ने कल्पना की थी कि आरक्षण की मदद से आगे बढ़ने वाले दलित, अपनी बिरादरी के दूसरे लोगों को भी समाज के दबे-कुचले वर्ग से बाहर लाने में मदद करेंगे. मगर, हुआ ये है कि तरक्कीयाफ़्ता दलितों का ये तबका, दलितों में भी सामाजिक तौर पर खुद को ऊंचे दर्जे का समझने लगा है. दलितों की ये क्रीमी लेयर बाक़ी दलित आबादी से दूर हो गई है.

दलित अपनी सुरक्षा को लेकर सड़कों पर उतरे हैं

गांवों में दलित आबादी का हाल

इनके दलित समुदायों से इतर अपने अलग हित हो गए हैं. इनकी तरक़्क़ी से समाज के दूसरे तबक़ों को जो शिकायत है, उसका निशाना आम तौर पर वो दलित बनते हैं, जो गांवों में रहते हैं, और, तरक़्क़ी की पायदान में नीचे ही रह गए हैं.

देश में कृषि व्यवस्था के बढ़ते संकट ने ऊंचे तबके के किसानों और दलितों के रिश्तों में और तनातनी बढ़ाई है. क्योंकि दलित भूमिहीन हैं, तो उन पर इस संकट का असर नहीं होता. साथ ही शिक्षा और रोज़गार के बढ़ते मौक़ों का फ़ायदा उठाकर और लामबंदी करके दलित आज ऊंचे तबके के ग्रामीणों से बेहतर हालात में हैं. दलितों के प्रति ये नाराज़गी कुछ छोटी हिंसक घटनाओं की वजह से भयंकर जातीय संघर्ष में बदल जाते हैं.

ये पूरी तरह से आज़ादी के बाद की आर्थिक सियासत का नतीजा है. जुल्मों का ये नया वर्ग तैयार हुआ है, जिसमें ऊंची जाति के हिंदू, दलितों को निशाना बनाते हैं, ताकि वो पूरे दलित समुदाय को एक सबक सिखा सकें. आज पूरे देश में दलित ऐसे हालात और जुल्म का सामना कर रहे हैं. दलित आज भी ज़्यादातर गांवों में रहते हैं. गैर दलितों के मुक़ाबले दलित आबादी का शहरीकरण आधी रफ़्तार से हो रहा है. ज़मीन के मालिक न होने के बावजूद वो आज भी भूमिहीन मज़दूर और सीमांत किसान के किरदार में ही दिखते हैं. दलितों के पास जो थोड़ी-बहुत ज़मीन है भी, तो वो छिनती जा रही है.

स्कूलों मे आज दलितों की संख्या दूसरी जातियों के मुक़ाबले ज़्यादा है, लेकिन ऊंचे दर्जे की पढ़ाई का रुख़ करते-करते ये तादाद घटने लगती है. आज ऊंचे दर्जे की पढ़ाई छोड़ने की दलितों की दर, गैर दलितों के मुक़ाबले दो गुनी है. कमजोर तबके से आने की वजह से वो घटिया स्कूलों में पढ़ते हैं. उनकी पढ़ाई का स्तर अच्छा नहीं होता, तो उनको रोज़गार भी घटिया दर्जे का ही मिलता है.

वो दलित जिसने अपनी बारात को लेकर हाईकोर्ट में लड़ी जंग

दलितों के ख़िलाफ़ बढ़ रहा है जुल्म

1990 के दशक से उदार आर्थिक नीतियां लागू हुईं, तो दलितों की हालत और ख़राब होने लगी. डार्विन के योग्यतम की उत्तरजीविता और समाज के ऊंचे तबक़े के प्रति एक ख़ास लगाव की वजह से नए उदारीकरण ने दलितों को और भी नुक़सान पहुंचाया है. इसकी वजह से आरक्षित नौकरियों और रोज़गार के दूसरे मौक़े कम हुए हैं. 1997 से 2007 के बीच के एक दशक में 197 लाख सरकारी नौकरियों में 18.7 लाख की कमी आई है. ये कुल सरकारी रोज़गार का 9.5 फ़ीसद है. इसी अनुपात में दलितों के लिए आरक्षित नौकरियां भी घटी हैं. ग्रामीण इलाक़ों में दलितों और गैर दलितों के बीच सत्ता का असंतुलन, दलितों पर हो रहे जुल्मों की तादाद बढ़ा रहा है. आज ऐसी घटनाओ की संख्या 50 हज़ार को छू रही है.

गुजरातः घोड़ी पर चढ़ने के जुर्म में दलित की हत्या

हिंदुत्व के उभार का दलितों पर प्रभाव

उदार आर्थिक नीतियों की वजह से हिंदुत्व के उभार और फिर इसके सत्ता पर क़ाबिज़ होने की वजह से दलितों के ख़िलाफ़ जुल्म बढ़ रहा है. 2013 से 2017 के बीच ऐसी घटनाओं में 33 फ़ीसद की बढ़ोतरी देखी गई है. रोहित वेमुला, उना, भीम आर्मी और भीमा कोरेगांव की घटनाओं से ये बात एकदम साफ़ है.

दलितों के मौजूदा हालात से एकदम साफ़ है कि संवैधानिक उपाय, दलितों की दशा सुधारने में उतने असरदार नहीं साबित हुए हैं, जितनी उम्मीद थी. यहां तक कि छुआछूत को असंवैधानिक करार दिए जाने के बावजूद ये आज तक क़ायम है.

आरक्षण का मक़सद दलितों की भलाई और उनकी तरक़्क़ी था, लेकिन इसने गिने-चुने लोगों को फ़ायदा पहुंचाया है. इसकी वजह से ज़ाति-व्यवस्था के समर्थक इस ज़ातीय बंटवारे को बनाए रखने में कामयाब रहे हैं, जो कि दलित हितों के लिए नुक़सानदेह है. चुनाव के फ़र्स्ट पास्ट द पोस्ट सिस्टम की वजह से और सत्ताधारी वर्ग की साज़िशों का नतीजा ये है कि आज दलित उधार की राजनीति में ही जुटे हुए हैं. दलितों के शिक्षित वर्ग को अपने समुदाय की मुश्किलों की फ़िक्र करनी चाहिए थी, लेकिन वो भी सिर्फ़ ज़ातीय पहचान को बढ़ावा देने और उसे बनाए रखने के लिए ही फ़िक्रमंद दिखते हैं.

-आनंद तेलतुंबडे

आधुनिक भारत व दलित... दलित साहित्य बौद्ध बनने से जीवन...

गतांक से आगे

साफ दौर भारतीय समाज के तात्कालिक स्वरूप का विरोध और समाज के सबसे पिछड़े और तिरस्कृत लोगों के अधिकारों की बात की। राजनीतिक और सामाजिक हर रूप में इसका विरोध स्वाभाविक था। यहां तक की महात्मा गांधी भी इन मांगों के विरोध में कूद पड़े। बाबा साहब ने मांग की दलितों को अलग प्रतिनिधित्व (पृथक निर्वाचिका) मिलना चाहिए यह दलित राजनीति में आज तक की सबसे सशक्त और प्रबल मांग थी। देश की स्वतंत्रता का बीड़ा अपने कंधे पर मानने वाली कांग्रेस की सांसें भी इस मांग पर थम गई थीं। कारण साफ था समाज के ताने बाने में लोगों का सीधा स्वार्थ निहित था और कोई भी इस ताने बाने में जरा सा भी बदलाव नहीं करना चाहता था। महात्मा गांधी जी को इसके विरोध की लाठी बनाया गई और बैठा दिया गया आमरण अनशन पर। आमरण अनशन वैसे ही देश के महात्मा के सबसे प्रबल हथियार था और वो इस हथियार को आये दिन अपनी बातों को मनाने के लिए प्रयोग करते रहते थे। बाबा साहब किसी भी कीमत पर इस मांग से पीछे नहीं हटना चाहते थे वो जानते थे कि इस मांग से पीछे हटने का सीधा सा मतलब था दलितों के लिए उठाई गई सबसे महत्वपूर्ण मांग के खिलाफ में हामी भरना। लेकिन उन पर चारों ओर से दबाव पड़ने लगा। और अंततः पूना पैक्ट के नाम से एक समझौते में दलितों के अधिकारों की मांग को धर्म की दुहाई देकर समाप्त कर दिया गया। इन सबके बावजूद डॉ ?अंबेडकर ने हार नहीं मानी और समाज के निचले तबकों के लोगों की लड़ाई जारी रखी। अंबेडकर की प्रयासों का ही ये परिणाम है कि दलितों के अधिकारों को भारतीय संविधान में जगह दी गई। यहां तक कि संविधान के मौलिक अधिकारों के जरिए भी दलितों के अधिकारों की रक्षा करने की कोशिश की गई।

बौद्ध बनने से जीवन सुधार

दलितों को लगने लगा है कि हिंदू धर्म से बाहर निकलना उनके लिए बेहतर रास्ता हो सकता है क्योंकि बीते सालों में नवयान बौद्धों की हालत सुधरी है जबकि हिंदू दलितों की जिंदगी वोट बैंक के रूप संगठित होने के बावजूद ज्यादा नहीं बदली है।

बौद्धों का जीवन सुधार

सन 2001 की जनगणना के मुताबिक देश में बौद्धों की जनसंख्या अस्सी लाख है जिनमें से अधिकांश नवबौद्ध यानि हिंदू दलितों से धर्म बदल कर बने हैं। सबसे अधिक 59 लाख बौद्ध महाराष्ट्र में बने हैं। उत्तर प्रदेश में सिर्फ 3 लाख के आसपास नवबौद्ध हैं फिर भी कई इलाकों में उन्होंने हिंदू कर्मकांडों को छोड़ दिया है। पूरे देश में 1991 से 2001 के बीच बौद्धों की आबादी में 24 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

1. लिंग अनुपात

हिन्दू दलितों के 936 की तुलना में बौद्धों के बीच महिला और पुरुष का लिंग अनुपात 953 प्रति हजार है। यह सिद्ध करता है कि बौद्ध परिवारों में महिलाओं की स्थिति में अब तक हिन्दू दलितों की तुलना में बेहतर है। यह काफी बौद्ध समाज में महिलाओं की उच्च स्थिति के अनुसार है। बौद्धों का यह अनुपात हिन्दुओं (931), मुसलमानों (936), सिख (893) और जैन (940) की तुलना में अधिक है।

2. बच्चों का लिंग अनुपात (0-6 वर्ष)

2001 की जनगणना के अनुसार बौद्धों के बीच लड़कियों और लड़कों का लिंग अनुपात 942 है, हिन्दू दलितों के 938 के मुकाबले के अनुसार यह अधिक हैं। यह लिंग अनुपात हिन्दुओं (925), सिख (786) की तुलना में बहुत अधिक है, और जैन (870)। यह हिंदू दलित परिवारों के साथ तुलना में है कि लड़कियों को बौद्धों के बीच बेहतर देखभाल और संरक्षण मिला हैं।

3. साक्षरता दर

बौद्ध अनुयायिओं की साक्षरता दर 72.7 प्रतिशत है जो हिन्दू दलितों (54.70 प्रतिशत) की तुलना में बहुत अधिक है। इस दर में भी हिंदुओं (65.1), मुसलमानों (59.1) और सिखों (69.4) की तुलना में काफी ज्यादा यह पता चलता है कि बौद्ध धर्म हिन्द दलितों से भी अधिक साक्षर हैं।जबकि यह जैनों की साक्षरता दर से बहुत कम है।जैन 95त्न साक्षर हैं।

4. महिलाओं की साक्षरता

बौद्ध महिलाओं की साक्षरता दर के रूप में हिंदू दलित महिलाओं के 41.9 प्रतिशत की तुलना में 61.7 प्रतिशत है। यह दर हिंदुओं (53.2) और मुसलमानों (50.1) की तुलना में भी अधिक है। यह बौद्ध समाज में महिलाओं की स्थिति के अनुसार है। इससे पता चलता है कि बौद्धों के बीच महिलाए हिंदू दलित महिलाओं की तुलना में अधिक शिक्षित हो रही है। जबकि यह जैनों से कम है।जैन महिला साक्षरता दर 90% है।

5. काम में भागीदारी दर

बौद्धों के लिए यह दर 40.6 प्रतिशत सबसे अधिक है जो हिन्दू दलितों के लिए अधिक से अधिक 40.4 प्रतिशत है। यह दर हिंदुओं (40.4), मुसलमानों (31.3) ईसाई (39.3), सिख (31.7) की तुलना में भी अधिक है, और जैन (32.7)। यह साबित करता है कि बौद्ध धर्म हिन्दू दलितों से भी अधिक कार्यरत हैं।

हर्ष के दोहे

गतांक से आगे

हर्ष समय की बात है, समय बड़ा बलवान।
पाँचों पाँडव सूरमा, रहे छिपा पहचान।।

समय-समय पर की बात है। सच में समय ही बलवान हुआ करता है। पाँचों पाँडव वीर और बलशाली थे, फिर भी उनके जीवन में ऐसा भी समय आया जब उन्हें आातवास के दिनों अपनी पहचान छुपाकर रहना पड़ा।

बरखा रानी आंवती, रूपक धरे हजार।
रूप मलकीयत सम्पदा, समझ देखि व्यवहार।।

जिस तरह से वर्षा आने पर अनेक रूपक धरती है, उसी तरह रूप, मालकिना हक, धन-सम्पत्ति आने पर व्यक्ति के व्यवहार को देखकर समझा जा सकता है।

भ्रम पले अग्यान में, दुःख जब बढ़ें विकार।
जीवन अंधी कोठरी, रोशन करें विचार।।

व्यक्ति के अज्ञान के कारण भ्रम पलते हैं और विकारों का बढ़ जाना ही दुःख का कारण है। जब जीवन अंधी कोठरी के समान हो जाये तब सुविचार ही उसको रोशन करते हैं।

झूठ बिगाड़े काम को, करे आत्मबल हीन।
हर्ष भरोसा तोड़ती, समर्थ होकर दीन।।

ण्ठ बनते हुए काम को बिगाड़ देती है, व्यक्ति के आत्मबल को क्षीण करती है एवं विश्वास को तोड़ देती है। व्यक्ति झूठ बोलकर समर्थ होते हुए भी दीन हो जाता है।

बाल ख्याल में सौ रहे, दाई ना माँ होय।
माँ ममता हर रोम में, माँ सा नांहि कोय।।

बच्चे की देखभाल करती हुई दाई उसका चाहे जितना ध्यान रखे, मगर वह माँ की बराबरी नहीं कर सकती। माँ की ममता तो उसके हर रोम-रोम में बसी होती है। अतः माँ जैसी अन्य कोई नहीं हो सकती।

अपने खढ्डे खोदते, अपने देते छाँह।
अपनों बिल सदता नहीं, अपन बराबर बाँह।।

संसार सागर की विचित्र स्थिति है। अपने ही घर-परिवार एवं सगे-संबंधी आपके लिए गढ्ढे खोदते हैं और परेशानी आने पर वे ही छाँह देते हैं। यहाँ अपनों के बिना कार्य सम्पन्न नहीं होते और वे ही आपके बराबर में दूसरी बाँह की तरह साथ होते हैं।

क्रमशः **- हरदान हर्ष**

मुख्यमंत्री ने महात्मा ज्योतिबा फुले की प्रतिमा पर श्रद्धासुमन अर्पित किए

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने महात्मा ज्योतिबा फुले की पुण्यतिथि पर बाइस गोदाम सर्किल स्थित उनकी प्रतिमा पर श्रद्धासुमन अर्पित किए। गहलोत ने महात्मा ज्योतिबा फुले का पुण्य स्मरण करते हुए कहा कि सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। हम सभी उनके जीवन से प्रेरणा लें।

रामसुख मार्ग का लोकार्पण

जयपुर। आगरा रोड़ हाइवे से पालडी मीना जेडीए कॉलोनी को जाने वाले मार्ग का नाम रामसुख मार्ग नगर निगम जयपुर की स्वीकृति के बाद लोकार्पण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमे जयपुर नगर निगम के महापौर श्री विष्णु लाटा, मुख्य अतिथि श्रीमती गंगा देवी, विधायक बगरू(जयपुर) की अध्यक्षता व विशिष्ट अतिथि श्री प्रशांत बैरवा विधायक निवाई – पीपलू (टोंक), अनिल कुमार गोठवाल, महासचिव डॉ. अम्बेडकर मेमोरियल सोसायटी(राज.) रामनिवास जोनवाल, चैयरमेन, नगर निगम , मोहन लाल मीना, चैयरमेन, नगर निगम नगर निगम, रमेश कुमार बैरवा, चैयरमैन नगर निगम,मोहम्मद शफीक़ कुरेशी, पार्षद, एस के बैरवा राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष,बद्री नारायण, प्रेम चन्द बैरवा, महासचिव, जयपुर शहर काँग्रेस कमेटी, राम अवतार बैरवा, महेंद्र बैरवा(पोत्र) रमेश वर्मा, हरजीत राज, मुकेश,चंद्र प्रकाश, पवन, मोहित कुमार बैरवा, रोहित, अंकित, सोहित , प्रभु लाल बैरवा प्रदेश अध्यक्ष, के. के. टाटीवाल, जिला अध्यक्ष, वेदराज मेहरा भटेरी, अखिल भारतीय प्रगतिशील बैरवा महासभा, मोती लाल सैनी, लेख राज पाल, फूलचंद मीना,मदन लाल रमन, छोटू राम मीना, रामखिलाड़ी मीना, रज्जाक मिरासी, सेठीमिरासी,रशीद खान, भगवान सहाय जमादार, रामगोपाल, बंशी मल्होत्रा, मंगल मीना, राम खिलाड़ी, मदन शिकारी, पूरनमल, अशोक सोयल, रामसहाय बलाई, जगदीश मुंशी, छोटू राम रमन, मृणाल अधिकारी, सीताराम, अशोक कुमार, निशा गौड़ व सैकड़ों स्थानीय निवासी उपस्थित थे।

राजस्थान जी.के.

1. राज्य में पूर्ण बहाव केआधार पर सबसे लंबी नदी कौनसी है
   उत्तर: बनास
2. राजस्थान की प्रथम महिला मंत्री कौन थी ?
   उत्तर: श्रीमती कमला बेनीवाल
3. राजस्थान की प्रथम राजस्थानी फिल्म कौनसी बनी थी ?
   उत्तर: नजराणों
4. राजस्थान का अबुल फजल किसे कहते हैं ?
   उत्तर: मुहणोत नैणसी
5. राजस्थान की प्रथम महिला मुख्यमंत्री का नाम क्या है
   उत्तर: श्रीमती वसुंधरा राजे
6. बागड़ के गाँधी के रूप में किसे जाना जाता है ?
   उत्तर: भोगीलाल पण्ड्या
7. किस शहर को जलमहलों की नगरी कहा जाता है ?
   उत्तर: डीग (भरतपुर)
8. राजस्थान का कानपुर किस शहर को कहा जाता है ?
   उत्तर: कोटा
9. राजस्थान में सर्वाधिक पशु संख्या वाला जिला कौनसा है ?
   उत्तर: उदयपुर
10. राजस्थान का क्षेत्रफल देश के क्षेत्रफल का कितने प्रतिशत भाग है ?
    उत्तर: 74 प्रतिशत (लगभग1/10 भाग)
11. किस शहर को राजस्थान का गौरव भी कहा जाता है ?
    उत्तर: चित्तौड़गढ़
12. किस स्वाधीनता सेनानी को राजस्थान के गाँधी केनाम से भी जाना जाता है ?
    उत्तर: गोकुल भाई भट्ट
13. किस दुर्ग को राजस्थान का वैल्लोर कहा जाता है ?
    उत्तर: भैंसरोड़गढ़ दुर्ग
14. राजस्थान की प्रथम महिला विधान सभाध्यक्ष का नाम क्या है?
    उत्तर: सुमित्रा सिंह
15. राजस्थान का सर्वाधिक आर्द्र शहर कौनसा है ?
    उत्तर: माउण्ट आबू
16. राजस्थान का सर्वाधिक आर्द्र जिला कौनसा है ?
    उत्तर: झालावाड़
17. राजस्थान राज्य का स्थापना दिवस कब मनाया जाता है ?
    उत्तर: 30 मार्च
18. लोक कलाओं के संरक्षण केलिए कार्यरत उदयपुर स्थित भारतीय लोक कला मंडल के संस्थापक कौन हैं
    उत्तर: देवीलाल सामर
19. भारत सरकार द्वारा 1986 में स्थापित पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र कहाँ स्थित है ?
    उत्तर: उदयपुर में
20. सन् 1958 में स्थापित राजस्थान साहित्य अकादमी का मुख्यालय कहाँ है ?
    उत्तर: उदयपुर में

बैरवा समाज के संन्त शिरोमणी... (पृष्ठ 1 का शेष)

राष्ट्रीय अध्यक्ष हरिनारायण बैरवा ने अपने उद्बबोधन में सर्व प्रथम महापौर नगर निगम जयपुर को महर्षि बालीनाथ जी महाराज मार्ग के नामकरण के लिए अखिल भारतीय बैरवा महासभा की और से बधाई दी। महर्षि बालीनाथ जी महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला, समाज को आह्वान किया कि बाबा साहेब के सिद्वान्तो पर चलने व उनके विचारो को अपने अन्दर उतारने की जरूरत बताई, समाज में फैली कुरूतियो को मिटाने, व बालिका शिक्षा पर जौर देने के लिये कहा।

राष्ट्रीय अतिरिक्त महामंत्री रोडूराम सुलानिया, रामनिवास जोनवाल, चैयरमैन व रमेश कुमार बैरवा चैयरमैन व मोहम्मद सफीक कुरैशी पार्षद नगर निगम जयपुर ने भी अपने-अपने उद्बबोधन में महापौर, विधायक एवं अखिल भारतीय बैरवा महासभा को बधाई दी तथा कहा कि हम समाज के पुनित कार्यो में हमेशा साथ रहगें।

प्रदेशाध्यक्ष कजोडमल बैरवा ने अपने उद्बबोधन में सभी अतिथियों व समाज बन्धुओं को समारोह में पधारने पर धन्यवाद ज्ञापित किया, तथा समाज से अपील की, कि वे समाज में फैली हुई कुरूतियों को जड़ से मिटाये और अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाये।

मीडिया प्रभारी विनोद कुमार बैरवा ने बताया कि समारोह में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष शंकरलाल नागरवाल, प्रभुदयाल लालावत (बून्दी), विनोद कुमार बैरवा (करौली), राष्ट्रीय मंत्री श्यामलाल बैरवा (केकडी), हनुमान बैरवा एडवोकेट, राष्ट्रीय संगठन मंत्री गोपाल लाल बैरवा, बी.डी. बैरवा, राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री भीखाराम बैरवा राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य जी.डी. मेहरा, प्रेमचन्द सुलानिया, विशेष आमंत्रित सदस्य लालाराम बैरवा (पूर्व आईएफएस), जे.पी. बैरवा, प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष वेदप्रकाश वर्मा, प्रदेश उपाध्यक्ष बाबुलाल महुआ, राधाकिशन बैरवा, रामधन बैरवा, प्रदेश अतिरिक्त महामंत्री बुद्धिप्रकाश देव, प्रदेश कोषाध्यक्ष श्रीनारायण चन्द्रवाल, प्रदेश आय-व्यय निरिक्षक रमेश कुमार गोठवाल, प्रदेश मंत्री रामफुल बैरवा (मुनीम), रामनिवास दास महाराज, ओमप्रकाश बैरवा, हजारीलाल बैरवा (प्राचार्य), लक्ष्मीनारायण बैरवा (कपूरवाला), हरिसिंह पाडला, प्रदेश संगठन मंत्री श्री लक्ष्मीनारायण बैरवा, संतोष कुमार (मुर्तिकार), नन्दलाल बैरवा (ठेकेदार), हीरालाल बैरवा, हरिराम नागवाल, सीताराम गोठवाल प्रदेश प्रचार-प्रसार मंत्री हीरालाल हुड़ला, प्रदेश कार्यालय मंत्री रामेश्वर प्रसाद गोठवाल (बस्सी), चन्द्रप्रकाश बैरवा प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य शंकरलाल मुर्तिकार, डॉ. बुद्धिप्रकाश बैरवा, प्रकाश बैरवा, अंकुर प्रसाद बैरवा, धर्मराज बैरवा (सिंगोर), रामदयाल बैरवा, हरिराम बैरवा, रामकिशोर बैरवा, प्रभातीलाल बैरवा, हीरालाल शास्त्री, सीताराम बैरवा, जयपुर कार्यवाहक जिलाध्यक्ष हरिकिशन बैरवा (माचीवाल), महामंत्री ओमप्रकाश कुवाल, कार्य. वरिष्ठ उपाध्यक्ष शान्तिस्वरूप बंशीवाल, कोषाध्यक्ष ललित लोदिया, उपाध्यक्ष रामदयाल बडोदिया, धमेन्द्र लालावत, मंत्री उमेश कुमार वर्मा, संगठन मंत्री सुरेन्द्र कुमार बैरवा, कन्हैयालाल मास्टर, प्रचार-प्रसार मंत्री टुमनपति बैरवा, ज्ञानचन्द बैरवा, बस्सी तहसील अध्यक्ष महादेव बैरवा, उपाध्यक्ष प्रहलाद बैरवा सांगानेर तहसील अध्यक्ष राजेन्द्र कुमार देव, महामंत्री विरेन्द्र कुवाल, मालपुरा तहसील अध्यक्ष बनवारीलाल बैरवा, रामदेव बैरवा ब्लॉक अध्यक्ष, दिपचन्द बैरवा, अध्यक्ष, बैरवा शिक्षा प्रसार एवं सहायतार्थ समिति, जयपुर, पांचुलाल बैरवा (पूर्व आरएएस), महेश धावनिया (श्रीबाबा), प्रभुलाल बैरवा (बैरवा युग), सुरेश कास्या (दिव्य तंरग), पंडित लादूराम बैरवा, पंडित भंवानी शंकर गोठवाल, पंडित गोपाल लाल बैरवा, दौलत माल्या, के.के. टाटीवाल, बंजरगलाल धवन, रामफुल कुण्डारा, सुखराम बैरवा, राजूलाल बेनीवाल, सुरेश बैरवा, राजेन्द्र कुमार देवतवाल, नवल कुमार बैरवा (जेडीए), महेन्द्र कुमार बैरवा (अधीक्षण अभियंता सह उप आयुक्त), पुरूषोतम कुण्डारा, बाबूलाल कुण्डारा, देवेन्द्र राज सुलानिया, अनुराग सुलानिया, श्रीमति अनिता जोनवाल, पिंकी बुहाड़िया, एवं समाज के वरिष्ठ नागरिकगण एवं समाज बधु उपस्थित थें।

श्याम लाल बैरवा उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मानित

अजमेर। अखिल भारतीय बैरवा महासभा के राष्ट्रीय मंत्री समाज के गौरव सम्मानीय श्याम लाल बैरवा केकड़ी को पांडिचेरी से अपने घर वापसी करते हुए बाय ट्रेन शिक्षा की नगरी काशी कोटा मैं पधारने पर कोटा रेलवे स्टेशन पर अखिल भारतीय बैरवा महासभा के प्रतिनिधि मंडल के द्वारा जिला महामंत्री रामस्वरूप भारती के नेतृत्व में साफा बंधवा कर स्वागत एवं मुंह मीठा कर सम्मान किया गया स्वागत में युवा अध्यक्ष बनवारी लाल बैरवा युवा महामंत्री राकेश मेहरा संगठन मंत्री अनिल वर्मा अन्य साथी गण शामिल रहे।

सामाजिक उत्कृष्ट कार्य करने पर इंटरनेशनल लेवल की डॉक्टरेट उपाधि एवं गोल्ड मेडल से सम्मानित होने पर

सर्व धर्म सामूहिक विवाह सम्मेलन... (पृष्ठ 1 का शेष)

समाजों एवं मुस्लिम समाज के लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम संयोजक रामदयाल बड़ौदिया ने कहा कि उनका उद्देश्य समता मूलक समाज बनाने का प्रयास, ऊंच नीच भेदभाव को मिटाना तथा शादी विवाहों में होने वाली फिजूलखर्ची को रोकना हैं। सामूहिक विवाह सम्मेलन में विवाह करने वाले दम्पतियों को 100 वर्गगज का प्लॉट, 3 लाख का बीमा तथा घरेलू सामान दिया जाता है। इसके अलावा इन जोड़ों को राज्य सरकार से 15,000 रुपये की राशि भी दी जाती है। बड़ोदिया ने बताया कि सर्वधर्म का आगामी विवाह सम्मेलन 29 जनवरी, 2020 को इसी जगह किया जायेगा। पंजीयन हेतु 9828948772 पर सम्पर्क किया जा सकता है। इसमें 501 जोड़ों के विवाह का लक्ष्य है। न्यू जाग्रति सामाजिक सेवा संस्थान के प्रदेशाध्यक्ष श्री रामदयाल जी बड़ोदिया, उपाध्यक्ष श्री बजरंग जी धवन, महामंत्री सियाराम स्वामी जी, प्रदेश प्रवक्ता धर्मराजजी बगड़वा एवं संस्थान के सभी पदाधिकारियों ने आगन्तुकों का आभार प्रकट किया।

श्री बाबा समाचार पत्र के विशिष्ठ सदस्य बनने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाऐं

श्री हरिनारायण गोठवाल
ग्राम पोस्ट गोनेर
सांगानेर, जयपुर

स्वामीत्व, मुद्रक, प्रकाशक, रजनी के लिए एम.बी. प्रिन्टर्स एफ-76 ए, करतारपुरा इण्ड. एरिया मोरानी वर्क्सशॉप के पास जयपुर से मुद्रित एवं सी-57, महेश नगर, 80 फीट रोड, जयपुर-15 (राज.) से प्रकाशित। सम्पादक-भवनेश धावनिया। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर होगा। मो.-9928260244, 9829271582 E-mail : shreebaba_2008@yahoo.com